DIGNITY EDUCATION VISION INTERNATIONAL
DEVI Sansthan
An ISO 9001-2015 certified NGO

जुलाई 2025

प्रेरणा की पुकार

रंजन की नई शुरुआत

रंजन सिर्फ़ छह साल का था — एक नन्ही-सी परछाईं, जो बच्चों से भरी एक कक्षा में गुमनाम-सा बैठा रहता था। उसके माता-पिता ने थोड़ी राहत की उम्मीद से उसे स्कूल भेजा था, लेकिन वहां भी कोई उसे सच में नहीं देख पाया। शिक्षकों को लगा कि वह "अलग" है, और शायद वह कुछ सीख ही नहीं सकता। इसलिए उन्होंने कोशिश करना भी छोड़ दिया। रंजन बस चुपचाप सबसे पीछे बैठा रहता, और धीरे-धीरे ऐसा लगने लगा मानो वह वहां मौजूद ही न हो।

लेकिन फिर, कुछ अद्भुत हुआ। हमारी DEVI Sansthan की टीम हिमाचल प्रदेश के नाभा गांव के स्कूल में पहुंची। हम वहां अपनी विशेष ALfA पद्धति सिखाने पहुंचे थे — एक ऐसी पद्धति जिससे बच्चे सिर्फ़ 45 दिनों में पढ़ना-लिखना सीख सकते हैं। जब हमने रंजन के बारे में सुना, तो शिक्षकों ने निराशा से कहा, "कोई फायदा नहीं, हमने सब कर लिया है।"

लेकिन हमने उनकी हार नहीं देखी — हमने उस बच्चे को देखा जिसे सिर्फ़ एक भरोसे की ज़रूरत थी। उसी पल, हमने ठान लिया कि रंजन को फिर से कक्षा का हिस्सा बनाना ही हमारा सबसे बड़ा लक्ष्य होगा। हमने शिक्षकों से स्पष्ट कहा, "हम यहां से तब तक नहीं जाएंगे, जब तक रंजन यह महसूस न कर ले कि वह इस कक्षा का अहम हिस्सा है।"

एक पूरे हफ्ते तक हमारी टीम ने रंजन के लिए अपना सब कुछ झोंक दिया। हमने बिल्कुल भी हार नहीं मानी। हमने ALfA पद्धति का इस्तेमाल किया — धीरे-धीरे, पूरे धैर्य और स्नेह से। और सबसे ज़रूरी बात — हमने उसे यह एहसास दिलाया कि कोई है जो सच में उसकी परवाह करता है।

और फिर, एक चमत्कार हुआ। ALfA पद्धति ने अपना असर दिखाना शुरू किया। पहले रंजन ने हमारी आंखों में आंखें डालीं, फिर एक धीमा-सा शब्द बोला। और जल्द ही, वह बोलने लगा — सच में बोलने लगा! वह अब वह शांत, खोया हुआ बच्चा नहीं था। वह सीख रहा था, मुस्कुरा रहा था, और सबके साथ घुल-मिल रहा था। जिन परेशानियों की बात सब करते थे, वे मानो हवा हो गईं।

रंजन की कहानी सिर्फ़ पढ़ना-लिखना सीखने की नहीं है — यह उस उम्मीद की ताकत की कहानी है जो असंभव को संभव बना देती है। यह बताती है कि हर बच्चे को एक मौका मिलना चाहिए — एक ऐसा इंसान चाहिए जो उसकी काबिलियत को देख सके।

ALfA पद्धति की असली खूबी इसी में है — अगर सही तरीका, सही समर्थन और सच्चा विश्वास हो, तो हर बच्चा सीख सकता है।

रंजन, जो कभी एक खोया हुआ चेहरा था, आज एक चमकता हुआ सितारा है — जो हमें यह सिखा रहा है कि अगर हम बस यकीन कर लें, तो क्या कुछ मुमकिन नहीं हो सकता।

Representative image used. We strictly follow guidelines and never share children's photos without consent

Sanjeev's Quiet Victory

लखनऊ के एक सरकारी स्कूल में पढ़ने वाला संजीव, एक तेज समझ वाला बच्चा था, लेकिन एक वाणी बाधा के कारण उसे अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता था। वह चुपचाप कक्षा के पिछले कोने में बैठा रहता, ज्ञान की प्यास में डूबा हुआ, जबकि दुनिया सिर्फ़ उसकी कमी देखती, उसकी काबिलियत नहीं। फिर DEVI Sansthan की टीम वहां पहुँची। उन्होंने संजीव की चुप्पी में छिपी हुई चमक को देखा। उन्होंने उसकी अक्षमता को नहीं, उसकी सीखने की तीव्र चाह को पहचाना। ALfA पद्धति (Accelerating Learning for All), एक आनंददायक और संवादात्मक तरीका, के ज़रिए उन्होंने संजीव के भीतर संभावनाओं के दरवाज़े खोलने शुरू किए। यह सिर्फ़ पढ़ाना नहीं था, यह एक भरोसे और विश्वास का रिश्ता था, एक यक़ीन कि संजीव के भीतर एक अनमोल प्रतिभा छिपी है। सिर्फ़ 45 दिनों में एक चमत्कार घटा। 'Known to Unknown' तकनीक के ज़रिए, वह बच्चा जो पहले खुद की ही आवाज़ से अनजान था, अब अपनी बात पूरी दुनिया तक पहुँचाने लगा। उसने कक्षा में भाग लेना शुरू किया, और हर नए ज्ञान के साथ उसका आत्मविश्वास खिलने लगा। सीखने की वह खुशी, जो पहले छुपी हुई थी, अब उसकी आंखों से झलकने लगी। उसकी इस अद्भुत प्रगति पर डॉ. सुनीता गांधी की ओर से एक खास उपहार मिला, एक व्हीलचेयर। यह सिर्फ़ एक उपहार नहीं था, यह स्वतंत्रता का प्रतीक था, नई संभावनाओं की राह, जिसमें संजीव अब आत्मविश्वास से आगे बढ़ सकता था, न सिर्फ़ पढ़ाई में बल्कि ज़िंदगी में भी। संजीव की कहानी इस बात का प्रमाण है कि करुणा और नवाचार से भरी शिक्षा किसी भी बच्चे की दुनिया बदल सकती है। यह कहानी हमें सिखाती है कि जब किसी को सच में देखा जाए, समझा जाए और उस पर विश्वास किया जाए, तो चुप्पी भी जीत बन जाती है।

Watch the full video on YouTube:
https://youtu.be/y1GsOX5SvjU?feature=shared

Ganesh's Breakthrough

Child on the right

गणेश, जो न सुन सकता था और न बोल सकता था, अक्सर कक्षा के एक कोने में चुपचाप बैठा रहता। उसके लिए दुनिया की हर आवाज़ सिर्फ़ एक हलचल थी — अधूरी, अनसुनी। किताबों के पन्ने उसके लिए चित्रों की एक रहस्यमयी गैलरी जैसे थे, जिनमें अर्थ की जगह सिर्फ़ आकृतियाँ थीं।लेकिन उसके माता-पिता जो खुद कभी स्कूल की दहलीज़ तक नहीं पहुँचे अपने बेटे के लिए एक सपना संजोए हुए थे: कि उनका बेटा पढ़ेगा, सीखेगा, और अपनी दुनिया को समझ पाएगा।रोज़ी-रोटी की तलाश में जब वे लखनऊ पहुँचे, तो गणेश का नाम एक सरकारी स्कूल में लिखवा दिया गया। यहीं पर NIPUN BHARAT मिशन के अंतर्गत DEVI Sansthan की टीम ने कदम रखा। हम लेकर आए थे ALfA — Accelerated Learning for All — एक ऐसी पद्धति जो सीखने को खेल, संवाद और आनंद से जोड़ती है। प्रारंभिक मूल्यांकन में गणेश एक भी प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका। उसकी चुप्पी भारी थी, लेकिन हमने उसमें छिपी उसकी क्षमता को पहचाना। उसकी खामोशी में कुछ था एक अबोला आत्मविश्वास, जो सिर्फ़ सहारे और समझ की तलाश में था। हमने निश्चय किया कि गणेश की प्रतिभा को उजागर करना हमारी ज़िम्मेदारी है।ALfA पद्धति के तहत 'Known to Unknown' तकनीक, रोचक खेलों और संवादात्मक गतिविधियों से उसकी यात्रा शुरू हुई। पहले-पहल वह हिचकिचाया, पर धीरे-धीरे उसकी आंखों में चमक आने लगी, चेहरा खिलने लगा। अब वह न केवल कक्षा में भाग लेने लगा, बल्कि इशारों से सवाल पूछता, साथी बच्चों के साथ खेलता और हर सीख के साथ आत्मविश्वास से भरता चला गया।

कुछ ही हफ्तों में वह पढ़ने और लिखने लगा। फिर एक दिन हमने उससे पूछा — "गणेश, क्या तुम सीख रहे हो?"
उसने कुछ नहीं कहा। लेकिन उसकी मुस्कराहट और सिर की हल्की सी हामी, उसकी आत्मा की सबसे बुलंद आवाज़ बन गई। वह मुस्कान उसकी ख़ामोश जीत थी। गणेश की कहानी हमें यह सिखाती है कि जब किसी बच्चे की ख़ामोशी को भी समझा जाए, उसे बिना शर्त समर्थन और अवसर मिले तो वह केवल पढ़ना नहीं सीखता,बल्कि जीना भी सीख जाता है।